Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन

प्रो0 रीता सिंह
शोध निर्देशक, शिक्षक–शिक्षा विभाग
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जौनपुर,उत्तर प्रदेश।

राजकुमार सिंह
शोधकर्त्ता (शिक्षाशास्त्र)
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number : 106-113
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 20 June 2021
Published : 30 June 2021

सारांश– शोध पत्र में कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन है। अध्ययनकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर अध्ययन कार्य में किया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है न्यादर्श के रूप में गोरखपुर जनपद के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों का चयन करते हुए उसमें अध्ययनरत् 450 बालिकाओं (150 पिछड़ी जाति, 150 अनुसूचित जाति/जनजाति तथा 150 अल्पसंख्यक वर्ग) का चयन किया गया है। सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति सूचकांक अनुसंधानकर्ता द्वारा सामाजिक तथा आर्थिक स्तरों पर स्वनिर्मित किया गया है जिसमें क्रमशः 20–20 कथनों का सम्मिलित किया गया है जो कि छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का विभिन्न बिन्दुओं पर मापन करते है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्ति हेतु प्रतिशत, एनोवा (प्रसरण विधि) तथा क्रान्तिक अनुपात को आधार बनाया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति/ जनजाति एवं अल्पसंख्यक बालिकाओं में अन्तर है अर्थात् पिछड़ी जाति की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का मध्यमान अनुसूचित जाति/ जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है।

मुख्य शब्द– कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय, सामाजिक–आर्थिक स्तर, पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग, छात्राएँ, अन्तर।

प्रस्तावना– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय सरकार ने स्त्री शिक्षा के प्रसार के अधिक प्रयास के लिए भारतीय संविधान ने भी नारी को समकक्षता प्रदान करते हुए घोषित किया है कि– ''राज्य किसी नागरिक के विरूद्ध केवल धर्म, प्रजाति, जाति, लिंग, जन्म–स्थान या इनमें से किसी आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।'' संविधान की धारा 43 में यह स्पष्ट निर्देशित है कि 14 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना है। चाहे वह बालक या बालिका किसी भी जाति, धर्म की हो। परन्तु आज भी स्त्री पुरुष की

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

साक्षरता दर में अन्तर है। इस अन्तर के मुख्य कारणों में आर्थिक सामाजिक, धार्मिक कारणों के साथ साथ अभिभावकों की भी मुख्य भूमिका हैं। अभिभावकों की सोच, मनोवृत्ति भी बालिका शिक्षा की प्रगति में बाधक बनी है। बालकों में अपने भविष्य को और बेटियों को दूसरे के घर जाना है, इस सोच के साथ वे बालक और बालिका में भेदभाव करतें हैं।

ग्रामीण बालिकाएँ एवं गरीब बालिकाएँ पारिवारिक, आर्थिक व सामाजिक कारणों से शिक्षा के आलोक से वंचित रह जाती है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 1979–80 में **''अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम''** प्रारम्भ किया गया ताकि उन बच्चों को साक्षरता की दौड़ में समावेशित किया जा सके।

भारत–सरकार ने राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम, 1990 के अन्तर्गत राष्ट्रीय महिला आयोग (1992) की स्थापना की। **'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' के अन्तर्गत 50 प्रतिशत महिलायें शिक्षा प्रदान करेगी।**

'खुशहाल बालिका भविष्य देश का' नारा देखकर बालिकाओं के विकास के लिए प्रावधान किया गया है। **1997 में 'बालिका समृद्धि योजना'** प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रीय महिला कोष की स्थापना 30 मार्च, 1993 को हुयी। इन सभी तथ्यों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि अतीत में जहाँ उसका जीवन घर की चाहरदीवारी तक सम्बद्ध था एवं उसे स्तरहीन समझा जाता था निश्चय ही इसके मूल में पुरुष का अहं छिपा हुआ था।

सबको अनिवार्य शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त कराने हेतु नवीं दसवीं व ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में प्रारम्भिक शिक्षा को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गई है। सभी वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलायी जा रही है जैसे मिड–डे मील (मध्याह्न भोजन) योजना, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, कन्या विद्याधन, छात्रवृत्ति, निःशुल्क पोशाक वितरण, बालिका समृद्धि योजना, किशोरी शक्ति योजना आदि। माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए कन्या विद्याधन, निःशुल्क साइकिल आदि का वितरण किया जाता रहा है।

प्रायः देखा जाता है कि जिनका आर्थिक एवं सामाजिक स्तर निम्न होता है। उस परिवार में पोषित बालक की शिक्षालब्धि उतनी अच्छी नहीं होती जितनी उच्च मध्य स्तर पर क्योंकि अर्थाभाव, रूढ़िवादी भावना तथा अशिक्षित परिवेश के कारण या तो वे इस ओर बढ़ते ही नही और यदि बढ़ते भी है तो ठीक से पढ़ नही पाते है। जिसका प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इस स्तर पर उन्हें शैक्षिक सुविधाएँ भी पर्याप्त मात्रा में नही मिल पाती है। एक तो स्वयं ही उसका कार्य सुचारू ढंग से नहीं चल पाता फिर ऊपर से अनियमितता तथा गैर पाबंदगी के कारण अध्यापक–अध्यापिकाओं की झिड़की तथा सहपाठियों के उपेक्षा भरे व्यंग उसे पढ़ाई छोड़ने पर ही विवश करता है। या फिर यदि उसे जबरदस्ती पढ़ाया जाता है तो उसका मन पढ़ाई में नही लग पाता जिसका प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि अच्छी रहती है। चाहे वे बालक हो या बालिकाएँ। इसके विपरीत निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर पर विषम परिस्थितियों, प्रतिकूल, वातावरण, सुविधाओं के अभाव तथा दूषित मार्ग दर्शन के कारण शैक्षिक उपलब्धि अच्छी नही रहती है। उच्च स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है। बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्रायः बालकों की अपेक्षा अच्छी होती है। कभी–कभी इसके विपरीत भी परिणाम होते है। उच्च स्तर पर बालक पैसे के बल पर तथा माता–पिता के आवश्यकता से अधिक लाड़–प्यार के कारण पढ़ने में मन नही लगाते पर बालिकाएँ इस स्तर पर पर्याप्त सुविधाएँ मिलने के कारण अच्छी शैक्षिक उपलब्धि अर्जित कर लेती है। कारण उनका क्षेत्र सीमित होता है। वे घर की चहार दीवारी में बन्द होने के कारण अपनी आर्थिक सुविधाओं का उपयोग नही कर पाती।

समस्या कथन– कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य– अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
3. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–विधि–– अध्ययनकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर अध्ययन कार्य में किया है।

जनसंख्या/समग्र– अध्ययन हेतु गोरखपुर मण्डल के अन्तर्गत कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया है न्यादर्श के रूप में गोरखपुर जनपद के कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों का चयन करते हुए उसमें अध्ययनरत् 450 बालिकाओं (150 पिछड़ी जाति, 150 अनुसूचित जाति/जनजाति तथा 150 अल्पसंख्यक वर्ग) का चयन किया गया है।

उपकरण–सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति सूचकांक : उपर्युक्त सूचकांक अनुसंधानकर्ता द्वारा सामाजिक तथा आर्थिक स्तरों पर स्वनिर्मित किया गया है जिसमें क्रमशः 20–20 कथनों का सम्मिलित किया गया है जो कि छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का विभिन्न बिन्दुओं पर मापन करते है। इस सूचकांक के द्वारा बालिकाओं से उनके परिवार, आय के स्रोत इत्यादि के कथन पूछे गये है और इस प्रकार पूर्ण रूप से भरे हुए सूचकांक का निम्नलिखित रूप सें फलांकन किया गया है। उत्तर की प्रभावगीता के सापेक्ष क्रमशः 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7.....इत्यादि अंक प्रदान किये गये। प्रत्येक सामा0/आर्थिक स्तर सूचकांक पूर्णांक 60 निर्धारित किया गया है।

सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति सूचकांक के आधार पर बालिकाओं को निम्नलिखित तीन स्तरों में बाट दिया गया।

सामा0–आर्थिक स्तर प्राप्तांक	सामा0आर्थिक स्तर
0-20	निम्न स्तर
21-40	मध्य स्तर
41-60	उच्च स्तर

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियॉ : प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्ति हेतु प्रतिशत, एनोवा (प्रसरण विधि) तथा क्रान्तिक अनुपात को आधार बनाया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।**

H_1 कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर है।

H_{01} कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/ जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक सूचकांक

सामाजिक–आर्थिक स्तर	सामाजिक–आर्थिक सूचकांक	बालिकाओं की संख्या					
		पिछड़ी जाति की बालिकाएँ	प्रतिशत (%)	अनुसूचित जाति/ जनजाति बालिकाएँ	प्रतिशत (%)	अल्पसंख्यक बालिकाएँ	प्रतिशत (%)
उच्च	41 से ऊपर	55	36.67%	30	20.00%	32	21.33%
मध्य	22–40	55	36.67%	62	41.33%	54	36.00%
निम्न	0–21	40	26.66%	58	38.67%	64	42.67%
योग		150	100.00%	150	100.00%	150	100.00%

पिछड़ी जाति की बालिकाएँ 55 (36.67%) उच्च एवं 55 (36.67%) मध्यम सामाजिक–आर्थिक सूचकांक के अन्तर्गत, अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाएँ 62 (41.33%) मध्यम एवं 58 (38.67%) निम्न

सामाजिक–आर्थिक सूचकांक के अन्तर्गत तथा अल्पसंख्यक बालिकाएँ 54 (36.00%) मध्यम एवं 64 (42.67%) निम्न सामाजिक–आर्थिक सूचकांक के अन्तर्गत पायी गयी। परिणामतः पिछड़ी जाति की बालिकाएँ उच्च एवं मध्य तथा अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक बालिकाएँ मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की पायी गयी।

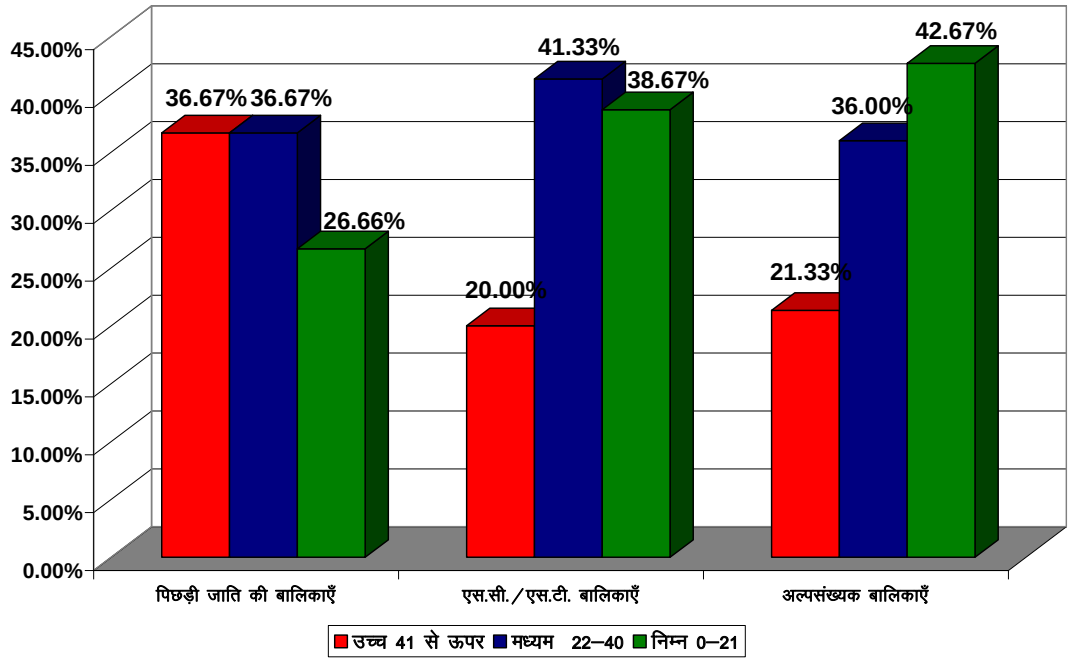

आरेखीय चित्रण–4.30

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का आरेखीय चित्रण (प्रतिशत में)

तालिका–2

सामाजिक–आर्थिक स्तर के अन्तर का एफ–मान

स्रोत	स्वतंत्रांश (df)	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–मान (F-Value)
समूहों के मध्य (Between Groups)	2	2567.12	1283.56	9.01*
समूहों के अन्दर (Within Groups)	447	63651.77	142.40	
कुल	**449**	**66218.89**	**1425.96**	

*0.05 = 3.02 एवं 0.01 = 4.66 पर सार्थक

समूहों के मध्य (Between Groups) का वर्ग योग (SS) एवं माध्य वर्ग योग (MS) क्रमशः 2567. 12 एवं 1283.56 तथा समूहों के अन्दर क्रमशः 63651.77 एवं 142.40 है। एफ–मान = (9.01) जो कि स्वतंत्रांश (df) = (2, 447) पर एफ–अनुपात के क्रान्तिक मान 0.05 एवं 0.01 पर 3.02 एवं 4.66 से अधिक है, जो दोनों स्तरों पर सूचक है। पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना (H_{01}) अस्वीकृत। परिणामतः सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में तीनों प्रकार की बालिकाओं में विभिन्नता है।

तालिका 1.1

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में अन्तर का क्रान्तिक–मान

क्र. सं.	जाति	N	M	σ_D	D	t-value
1.	पिछड़ी जाति	150	34.47	1.38	5.07	3.68*
	अनुसूचित जाति/जनजाति	150	29.40			
2.	पिछड़ी जाति	150	34.47	1.38	5.06	3.67*
	अल्पसंख्यक	150	29.41			
3.	अनुसूचित जाति/जनजाति	150	29.40	1.38	0.01	0.01
	अल्पसंख्यक	150	29.41			

तालिका 1.1 में क.गाँ.बा.आ. विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक– आर्थिक स्तर का मध्यमान क्रमशः 34.47, 29.40 एवं 29.41 है। पिछड़ी जाति बालिकाओं का अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के मध्य क्रान्तिक–मान क्रमशः 3.68 एवं 3.67 है जो 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक है अतः पिछड़ी जाति बालिकाओं का अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में अन्तर है जबकि अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य क्रान्तिक–मान 0.01 है जो कि 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर असार्थक है। अतः अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर में अन्तर नहीं है।

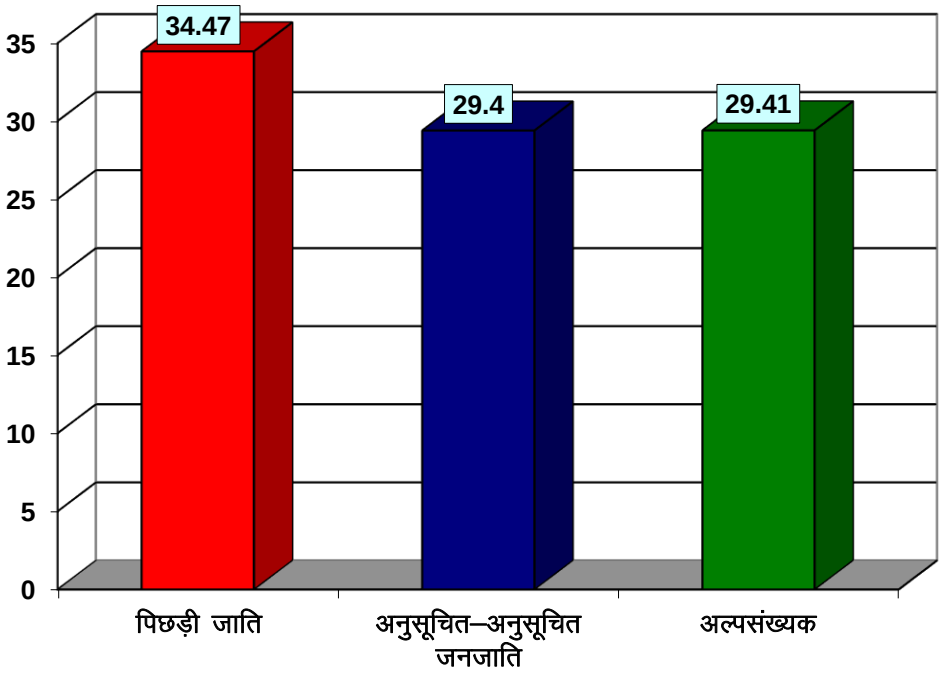

आरेखीय चित्रण–2

क.गाँ.बा.आ. विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़ी, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्यमान

निष्कर्ष– परिकल्पनाओं के परीक्षणोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- पिछड़ी जाति की बालिकाएँ 36.67% उच्च एवं 36.67% मध्यम सामाजिक–आर्थिक सूचकांक के अन्तर्गत, अनुसूचित जाति/जनजाति की बालिकाएँ 41.33% मध्यम एवं 58 38.67% निम्न सामाजिक–आर्थिक सूचकांक के अन्तर्गत तथा अल्पसंख्यक बालिकाएँ 36.00% मध्यम एवं 42.67% निम्न सामाजिक–आर्थिक सूचकांक की है। निष्कर्षतः पिछड़ी जाति की बालिकाएँ अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक बालिकाओं की अपेक्षा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर है।
- सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति/ जनजाति एवं अल्पसंख्यक बालिकाओं में अन्तर है अर्थात् पिछड़ी जाति की बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का मध्यमान अनुसूचित जाति/ जनजाति एवं अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च है।

सन्दर्भ सूची

1.गुप्ता, प्राची (2018). अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक बाधाओं का तुलनात्मक अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम–3, इश्शू–2, पृ0 367–368

2.झाझडिया, मनोज (2015). सामाजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर छात्र– छात्राओं की कुण्ठा का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू, वॉल्यूम–2, इश्शू–1, पृ0 64–69

3.फ्रैंकी, दीपा एवं चामुण्डेश्वरी, एस. (2014). साइको–सोशल कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ कैरेन्ट रिसर्च एण्ड ऐकेडमिक रिव्यू, वाल्यूम–2, नं0 2, पृ0 148–158

4.मिश्रा, विजय लक्ष्मी (2017). अल्पसंख्यक, पिछड़े एवं अनुसूचित वर्ग के अभिभावकों की बालिका शिक्षा के प्रति मतकोंण का तुलनात्मक अध्ययन, पैरियाडिक रिसर्च, वॉ0 6, इश्शू–2, पृ0 83–87

5.यादव, नरेन्द्र कुमार सिंह (2000). अनुसूचित जाति के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

6.राजपूत, प्राची एवं सिंह, देवेन्द्र (2016). माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, नार्थ एशियन इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेस – ह्युमिनिट्ज, वॉल्यूम–2, इश्शू–5।